Zikrullah Ke Waqiat (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 459
Weekly Booklet : 459

अमीरे अहले सुन्नत का तक़रीबन 34 साल पहले का बयान

ज़िक्रुल्लाह के वाक़िआत

(सफ़हात : 16)

पीठ पर कोड़े का निशान 05
केकड़े का शरई हुक्म 08
मछलियां पकड़ने वालों का वाक़िआ 12
क़ाबिले रश्क कौन ? 13

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط

ज़िक्रुल्लाह के वाक़िआत

दुआए अ़त्तार : या रब्बे करीम ! जो कोई 16 सफ़हात का रिसाला "ज़िक्रुल्लाह के वाक़िआत" पढ़ या सुन ले उसे दोनों जहां में सुकून और चैन अ़ता फ़रमा कर मां बाप और ख़ानदान समेत जन्नतुल फ़िरदौस में बे हिसाब दाख़िला नसीब फ़रमा। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللّٰہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस ने शौक़ व मह़ब्बत की वजह से दिन और रात में मुझ पर तीन तीन मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह पाक पर ह़क़ है कि वोह उस के उस दिन और उस रात के गुनाह बख़्श दे।

(معجم کبیر، 18/362، حدیث:928 ملتقطا)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

सय्यिदुना जुनैद बग़दादी और परिन्दा

मश्हूर वलियुल्लाह ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه की ख़िदमत में किसी ने एक परिन्दा तोह़फ़तन पेश किया, आप ने उस को अपने पास रखा लेकिन जल्द ही आज़ाद कर दिया। आप की ख़िदमत में अ़र्ज़ की गई : आप ने उसे क्यूं आज़ाद कर दिया ? फ़रमाने लगे : इस परिन्दे ने मुझ से कहा : ऐ जुनैद ! आप ख़ुद तो आज़ादी के साथ हर त़रफ़ घूमते हैं, अपने अह़बाब और दोस्तों से मुलाक़ात भी करते हैं लेकिन आप ने मुझे क़ैद कर रखा है, मुझे भी आज़ाद कर दीजिए ताकि मैं भी अपने दोस्तों से मुलाक़ात कर सकूं और आज़ादी के साथ उड़ सकूं। येह बात सुन कर मैं ने उसे आज़ाद कर दिया।

जुनैद बग़दादी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जब मैं ने उस परिन्दे को आज़ाद किया तो उस ने मुझ से कहा : ऐ जुनैद ! मैं इस लिए क़ैद किया गया कि एक दिन अल्लाह पाक के ज़िक्र से ग़ाफ़िल हो गया था, मैं आप से वादा करता हूं कि आइन्दा कभी भी अल्लाह पाक के ज़िक्र और उस की याद से ग़ाफ़िल न रहूंगा, ऐ जुनैद ! मैं सिर्फ़ एक दिन अल्लाह पाक के ज़िक्र से ग़ाफ़िल हुवा तो इस जुर्म की सज़ा मुझे क़ैद की सूरत में मिली तो उन इन्सानों का क्या बनेगा जो उ़म्र भर अल्लाह पाक की याद से ग़ाफ़िल रहते हैं ? येह नसीह़त करने के बाद वोह परिन्दा उड़ गया।

अ़ल्लामा सफ़ूरी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه इस वाक़िए़ के तह़त फ़रमाते हैं : वोह परिन्दा बार बार ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के पास आने लगा और आप से मानूस हो गया यहां तक कि जब आप दस्तरख़्वान पर खाना तनावुल फ़रमाते तो वोह दस्तरख़्वान पर आ कर बैठ जाता और आप के साथ खाना खाता और दाने चुगता। जब ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का इन्तिक़ाल हुवा तो वोह परिन्दा नीचे गिरा, तड़पने लगा, तड़प तड़प कर उस ने भी दम तोड़ दिया। आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के इन्तिक़ाल के बाद किसी ने ख़्वाब में देख कर पूछा : مَافَعَلَ اللهُ بِكَ؟ यानी अल्लाह पाक ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया : मैं ने एक बे ज़बान परिन्दे पर रह़म किया तो अल्लाह पाक ने मुझ पर भी रह़म किया। (नुज़्हतुल मजालिस, 1/20)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस ईमान अफ़रोज़ वाक़िए़ से हमें इ़ब्रत के बहुत से मदनी फूल ह़ासिल हुए जिन में से चन्द पेशे ख़िदमत हैं :

﴾1﴿ जो परिन्दा अल्लाह पाक के ज़िक्र से ग़ाफ़िल होता है वोह क़ैद हो जाता है। जमादात व नबातात का मुआ़मला भी कुछ इसी त़रह़ का है चुनान्चे ह़दीसे पाक में है : दरख़्त पर कुल्हाड़ा उसी वक़्त चलता है जब वोह अल्लाह पाक के ज़िक्र से

ग़ाफ़िल होता है। (مصنف ابن ابی شیبہ، 8/146، حدیث:11) दुनिया में जो भी परिन्दे और जमादात वग़ैरा हैं सब अल्लाह पाक का ज़िक्र करते हैं और हर वक़्त उस की याद में उन की ज़बान तर रहती है।

﴿2﴾ दूसरा मदनी फूल येह ह़ासिल हुवा कि अल्लाह पाक की अ़ता से औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ परिन्दों से बात चीत करते और उन की गुफ़्तगू समझते हैं।

﴿3﴾ एक मदनी फूल येह भी ह़ासिल हुवा कि चरिन्दों और परिन्दों के साथ भी हुस्ने सुलूक से पेश आना चाहिए लिहाज़ा जो लोग जानवर पालते हैं उन्हें इस बारे में ख़ूब ग़ौरो फ़िक्र कर लेना चाहिए।

मछलियां पालना

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! आज कल लोग शीशे के छोटे से शोकेस में प्लास्टिक के कुछ फूल डाल कर रंग बिरंगी छोटी छोटी मछलियां रखते हैं, वोह प्यारी प्यारी मछलियां शोकेस के शीशे को पानी समझ कर रास्ता ढूंडते हुए बार बार उस पर अपना मुंह मारती हैं और देखने वाले उन की इस ह़रकत से लुत्फ़ अन्दोज़ होते हैं। ऐसों को सोचना चाहिए कि येह मछलियां वसीअ़ समुन्दर में आज़ादी से तैरती हैं लेकिन आज इन बेचारियों को एक छोटे से शोकेस में बे दर्दी से बन्द कर दिया गया है।

अगर्चे शीशे के शोकेस में मछलियां रखना ह़राम नहीं लेकिन ज़रा सोचिए! अगर हमें एक कमरे में नज़र बन्द कर दिया जाए तो हम पर क्या गुज़रेगी ? यक़ीनन दुनिया की तमाम आसाइशें मुहय्या होने के बावुजूद हमारा जीना दोभर हो जाएगा।

इसी त़रह़ उन परिन्दों को देख कर भी बड़ा तरस आता है जिन्हें लोगों ने पिंजरों में क़ैद कर के उन की परवाज़ का सिल्सिला मुन्क़त़ेअ़ (यानी ख़त्म) कर दिया है। इसी त़रफ़ इशारा करते हुए किसी शाइ़र ने क्या ख़ूब कहा है :

ऐ ताइरे लाहूती ! उस रिज़्क़ से मौत अच्छी

जिस रिज़्क़ से आती हो परवाज़ में कोताही

बहरहाल अल्लाह पाक की किसी मख़्लूक़ पर बिला वजह ज़ुल्म नहीं करना चाहिए, कहीं ऐसा न हो येही हमारी आख़िरत की बरबादी का सबब बन जाए।

बिल्ली पर ज़ुल्म करने का अ़ज़ाब

ह़दीसे पाक में है : एक औ़रत को इस वजह से अ़ज़ाब में मुब्तला किया गया कि उस ने एक बिल्ली को क़ैद किए रखा, न तो उसे कुछ खिलाया पिलाया और न ही छोड़ा कि वोह कुछ खा कर गुज़ारा कर लेती यहां तक कि वोह मर गई।

(مسلم، ص1082، حدیث:6675)

परिन्दों को तक्लीफ़ न पहुंचे

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अगर्चे परिन्दे पालना ना जाइज़ो ह़राम नहीं लेकिन अगर कोई पालता है तो वोह उन के लिए ग़िज़ाओं का ज़ख़ीरा रखे ताकि वोह खाते पीते रहें और उन्हें किसी क़िस्म की तक्लीफ़ न पहुंचने पाए। जहां तक शीशे के शोकेस में मछलियां पालने का तअ़ल्लुक़ है तो येह शौक़ के इ़लावा कुछ नहीं। ग़ौर कीजिए ! क़ैद में उन बेचारियों पर क्या गुज़रती होगी ? येह खुले पानी में बिल्कुल आज़ाद होती हैं, जहां चाहती हैं जाती हैं। आप ने देखा होगा कि येह छोटी छोटी मछलियां बार बार शीशे पर अपना मुंह मारती हैं क्यूंकि शीशा ट्रांसपेरेन्ट (यानी पानी की त़रह़) होता है जिसे येह पानी गुमान करती हैं, इस त़रह़ बार बार शीशे से मुंह टकराने के सबब उन्हें जो तक्लीफ़ होती होगी उसे कोई एह़सास रखने वाला ही समझ सकता है। बाज़ लोग बहुत ह़स्सास होते हैं जैसा कि एक वाक़िआ़ बयान किया जाता है कि

पीठ पर कोड़े का निशान

एक शख़्स ने अपने घोड़े को ज़ोर से कोड़ा मारा तो वहां क़रीब ही किसी चारपाई वग़ैरा पर एक बुज़ुर्ग तशरीफ़ फ़रमा थे जिन्हें उस का इतना सदमा हुवा कि उन की पीठ पर कोड़े का निशान आ गया।

ऐ आशिक़ाने रसूल ! अगर हम अल्लाह पाक की मख़्लूक़ पर रहम करेंगे, اِنْ شَآءَاللّٰه हम पर भी रहम किया जाएगा। लेकिन نَعُوْذُبِاللّٰه ! अगर हम बेजा ज़ुल्म करेंगे तो बरोज़े क़ियामत फंस जाएंगे। याद रखिए ! बकरी वग़ैरा हलाल जानवरों को ज़ब्ह करना ज़ुल्म नहीं क्यूंकि शरीअ़त ने उन्हें ज़ब्ह करने की इजाज़त दी है लेकिन उन के साथ ज़ुल्म की मुख़्तलिफ़ सूरतें हैं मसलन बकरी या बकरे को ज़ब्ह करते वक़्त इतना ज़ियादा ज़ब्ह कर देना कि छुरी रीढ़ की हड्डी या हराम मग़्ज़ तक पहुंच जाए। याद रहे ! रीढ़ की हड्डी गर्दन से ले कर कमर के आख़िरी सिरे तक होती है इस में दुम शामिल नहीं, इस हड्डी से एक सफ़ेद डोरी निकलती है जो हराम मग़्ज़ कहलाती है उस का खाना हराम है मगर आम तौर पर लोगों को इस का पता नहीं होता। चांप और कमर के गोश्त के साथ येह सफ़ेद डोरी भी आ जाती है और बहुत से लोग इसे बोटी का हिस्सा समझ कर खा जाते हैं। अगर गोश्त बेचने वाला माहिर क़स्साब हो तो वोह इस सफ़ेद डोरी को गोश्त से अलग कर के फेंक देता है। मुर्ग़ी की गर्दन में भी येही सफ़ेद डोरी होती है जो कि हराम मग़्ज़ है लिहाज़ा इसे भी नहीं खाना चाहिए।

बिला वजह तक्लीफ़ पहुंचाना ज़ुल्म है

जानवर ज़ब्ह करते वक़्त हराम मग़्ज़ तक छुरी पहुंचाना बिला वजह की तक्लीफ़ है क्यूंकि ज़ब्ह में चार रगें काटना होती हैं और ज़ब्ह करते वक़्त अगर तीन रगें या चारों का अक्सर हिस्सा कट जाए तब भी ज़बीहा हलाल हो जाएगा।

(फ़तावा हिन्दिया, 5/287)

बकरे पर ज़ुल्म का अन्दाज़

बाज़ क़स्साबों को देखा गया है ख़ुसूसन क़ुरबानी के दिनों में कि वोह जल्दबाज़ी में बकरे की गर्दन पर छुरी फेरते हैं और फिर उस का थोड़ा सा सर काट कर एक दम झटके से उस की गर्दन चटख़ देते हैं हालांकि अभी उस में कुछ जान बाक़ी होती है, अगर उन ज़ालिमों को समझाया जाए तो अपनी ग़लती मानने के बजाए उल्टा लड़ाई झगड़े पर उतर आते हैं। ऐसों को सोचना चाहिए कि अगर उन की गर्दन इस तरह तोड़ी जाए तो उन का क्या हाल होगा ! देखिए ! बे ज़बान जानवर जो न किसी का कुछ बिगाड़ सकता है और न ही किसी से फ़रियाद कर सकता है उस के साथ इस तरह का ज़ुल्म भरा अन्दाज़ इख़्तियार करना कितना बड़ा जुर्म है !

भैंस पर ज़ुल्म का अन्दाज़

इसी तरह बाज़ ज़ालिम क़स्साब भैंस ज़ब्ह करते वक़्त गर्दन की खाल चीरते हुए छुरी घोंप कर उस के दिल की रगें काट डालते हैं। ज़रा सोचिए ! बे ज़बान भैंस जिस की टांगें बन्धी हुई होती हैं, गिराने के बाद कई लोगों ने जिसे पकड़ा हुवा होता है और फिर बेचारी की ज़िन्दा हालत में खाल उधेड़ना, छुरी घुमा कर उस के दिल की रगें काटना और फिर हाथ में छुरी लिए हुए बहादुरों की तरह उस के पास खड़े होना जैसे कोई बहुत बड़ा क़िला फ़त्ह कर लिया हो, ज़ब्ह करने का येह अन्दाज़ यक़ीनन, यक़ीनन, यक़ीनन जानवर पर ज़ुल्म और उसे बिला वजह तक्लीफ़ पहुंचाना है, जिन लोगों के सीनों में शफ़क़त भरा दिल होता है उन के लिए येह बड़ा तक्लीफ़ देह काम है।

ऐ आशिक़ाने रसूल ! अपने यहां और जहां आप की बात सुनी जाती हो वहां क़ुरबानी के मौक़े पर इस तरह के ज़ुल्म को रोकिए। याद रखिए ! जब जानवरों के मुआमले में हमारा दिल हमदर्द और शफ़क़त भरा होगा तो اِنْ شَآءَاللّٰه हमें सवाब

भी मिलेगा और मुआशरे की इस्लाह में मदद भी हासिल होगी कि जब हम जानवरों पर शफ़क़त करते हैं तो इन्सानों पर बदर्जए औला शफ़क़त करनी चाहिए।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आप ने बयान की इब्तिदा में सुना कि हज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को एक ऐसा परिन्दा तोहफ़े में पेश किया गया जो अल्लाह पाक के ज़िक्र से ग़ाफ़िल होने के सबब क़ैद हुवा था। इसी तरह का मज़ीद एक दिलचस्प वाक़िआ पेशे ख़िदमत है :

यादे इलाही से ग़ाफ़िल मछलियां

एक बुज़ुर्ग अपनी नन्ही मुन्नी बच्ची साथ लिए दरिया के किनारे आए और मछलियां पकड़ने लगे, वोह मछलियां पकड़ कर अपनी बच्ची को देते ताकि उन्हें टोकरी में जमा करती रहे, काफ़ी देर बाद जब वोह बुज़ुर्ग शिकार से फ़ारिग़ हुए तो देखा टोकरी ख़ाली थी। उन्हों ने बच्ची से पूछा : मछलियां कहां गईं ? जवाब दिया : अब्बाजान ! आप ने बताया था कि माहीगीर के जाल में वोही मछली फंसती है जो अल्लाह पाक की याद से ग़ाफ़िल होती है लिहाज़ा आप जो मछली पकड़ कर मुझे देते तो मैं येह समझ कर कि शायद येह वोही मछली होगी जो अल्लाह पाक की याद से ग़ाफ़िल हो गई होगी, उस मछली का मुंह पकड़ती और उसे येह कह कर दरिया में छोड़ देती कि देख ! तू अल्लाह पाक के ज़िक्र से ग़ाफ़िल हुई तो हमारे जाल में फंस गई, अब मैं तुझे मोहलत देती हूं आइन्दा अल्लाह पाक की याद से ग़ाफ़िल मत होना। इस के साथ साथ मेरे ज़ेहन में येह बात भी आई थी कि कहीं ऐसा न हो कि उन ग़ाफ़िल मछलियों को खा कर हम भी अल्लाह पाक की याद से ग़ाफ़िल हो जाएं। (नुज़्हतुल मजालिस, 1/18 माख़ूज़न)

इस वाक़िए से कोई येह न समझे कि मछली खाना हराम है। याद रखिए ! मछली हलाल है, सिर्फ़ वोह मछली हराम है जो पानी में क़ुदरती मौत मर कर उल्टी तैर जाए। (دُرِّ مختار، 9/511)

केकड़े का शरई हुक्म

ऐ आशिक़ाने रसूल ! येह उसूल ज़ेहन नशीन कर लीजिए कि मछली के इलावा पानी का हर जानवर हराम है। (بدائع الصنائع، 4/144) केकड़ा खाना हराम है क्यूंकि येह मछली नहीं बल्कि पानी में रहने वाला एक जानवर है।

(फ़तावा रज़विय्या, 24/208)

झींगा खाना कैसा ?

झींगे के बारे में उलमाए किराम का इख़्तिलाफ़ है, बाज़ उलमा कहते हैं : झींगा मछली है, बाज़ कहते हैं : झींगा मछली नहीं। मेरे आक़ा आला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : झींगा खाना ख़िलाफ़े औला है यानी बेहतर येह है कि न खाया जाए।

(फ़तावा रज़विय्या, 20/339 मुलख़्ख़सन)

हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आज़मी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इरशाद फ़रमाते हैं : झींगे के मुतअल्लिक़ इख़्तिलाफ़ है कि येह मछली है या नहीं ? इसी बिना पर इस की हिल्लत व हुर्मत (यानी इस के हलाल व हराम होने) में भी इख़्तिलाफ़ है ब ज़ाहिर उस की सूरत मछली की सी नहीं मालूम होती बल्कि एक क़िस्म का कीड़ा मालूम होता है लिहाज़ा इस से बचना ही चाहिए।

(बहारे शरीअ़त, 3/325, हिस्सा : 15)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! परिन्दे हों या कोई और ज़िन्दा चीज़ सब अल्लाह पाक की तस्बीह करते और उस की याद में मगन रहते हैं, जैसा कि पारह 15 सूरए बनी इसराईल की आयत नम्बर 44 में इरशादे बारी तआ़ला है : ﴿وَ اِنْ مِّنْ شَیْءٍ اِلَّا یُسَبِّحُ بِحَمْدِهٖ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और कोई चीज़ नहीं जो उसे सराहती (तारीफ़ करती) हुई उस की पाकी न बोले।

इस आयते मुबारका के तहत मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه इरशाद फ़रमाते हैं : हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया : हर ज़िन्दा चीज़ अल्लाह की तस्बीह करती है और हर चीज़ की तस्बीह उस की हस्बे हैसिय्यत है।

सदरुल अफ़ाज़िल رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه मज़ीद फ़रमाते हैं : मुफ़स्सिरीन ने कहा है कि दरवाज़ा खोलने की आवाज़ और छत का चटख़ना येह भी तस्बीह करता है और इन सब की तस्बीह "سُبْحٰنَ اللهِ وَبِحَمْدِهٖ" है।

(ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान, पा 15, बनी इसराईल, तहतल आयह : 44, स. 533)

ऐ आशिक़ाने रसूल ! परिन्दे और चरिन्दे सब अपनी अपनी बोलियों में अल्लाह पाक की तस्बीह बयान करते हैं।

जंगल में मेरे सिवा ज़िक्र करने वाला कोई नहीं

हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام एक जंगल से अल्लाह पाक का ज़िक्र करते हुए गुज़र रहे थे कि अचानक दिल में ख़याल आया कि शायद इस जंगल में मेरे सिवा कोई अल्लाह पाक का ज़िक्र करने वाला न होगा। अल्लाह पाक ने तमाम परिन्दों, दरिन्दों और चरिन्दों को हुक्म दिया कि सब अपने अपने ज़िक्र की आवाज़ बुलन्द करें, अब हर तरफ़ से परिन्दों, दरिन्दों और चरिन्दों के ज़िक्र की आवाज़ें बुलन्द होने लगीं, सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام फ़ौरन इस मुआमले को समझ गए और सज्दे में जा कर अल्लाह पाक से मुआफ़ी चाहते हुए अ़र्ज़ गुज़ार हुए : ऐ अल्लाह ! क्या ज़मीन के नीचे भी तेरा ज़िक्र हो रहा है ? अल्लाह पाक ने इरशाद फ़रमाया : "اِضْرِبْ بِعَصَا عَلَى الْاَرْضِ" यानी अ़सा (लाठी) ज़मीन पर मारो। सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने ज़मीन पर अपना अ़सा मारा तो ज़मीन फट गई और उस में से जोश मारता हुवा पानी नज़र आने लगा, फिर हुक्म हुवा कि उस पर भी अ़सा मारो, आप

عَلَيْهِ السَّلَام ने उस पर असा मारा तो पानी का सीना चाक हुवा और उस में से एक काला पत्थर नुमूदार हुवा, ब हुक्मे ख़ुदावन्दी उस पर भी असा मारा तो वोह पत्थर दो हिस्सों में तक़्सीम हो गया, उस में से एक सब्ज़ जानवर निकला जो अल्लाह पाक का ज़िक्र कर रहा था। सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने उस से पूछा : तेरी उम्र कितनी है ? उस ने कहा : 300 साल। फ़रमाया : तेरा काम क्या है ? बोला : क्या अल्लाह पाक की याद से भी कोई अहम काम है ? ऐ मूसा ! मैं हर वक़्त अल्लाह पाक की याद में मश्ग़ूल रहता हूं, मुझे दिन में दो मरतबा पानी पेश किया जाता है लेकिन मैं इस डर से नहीं पीता कि कहीं ऐसा न हो कि मैं पानी पीने में मश्ग़ूल हो जाऊं इस दौरान मेरी मौत वाक़ेअ हो जाए और यूं मैं अल्लाह पाक का ज़िक्र छोड़ कर ग़फ़्लत की मौत मर जाऊं। येह कह कर वोह सब्ज़ जानवर ग़ाइब हो गया, पत्थर पानी के नीचे चला गया और ज़मीन दोबारा अपनी अस्ली हालत पर आ गई।

(अनीसुल वाइज़ीन, स. 64)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! ज़मीन के अन्दर रहने वाली मख़्लूक़ भी अल्लाह पाक का ज़िक्र करती है। इस ज़िम्न में एक और वाक़िआ पेशे ख़िदमत है, चुनान्चे

इस कीड़े को किस लिए पैदा किया गया होगा ?

हज़रते इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه नक़्ल करते हैं कि अल्लाह पाक के नबी हज़रते दाऊद عَلَيْهِ السَّلَام अपने मुबारक मकान में ज़बूर शरीफ़ की तिलावत कर रहे थे कि मिट्टी से एक सुर्ख़ कीड़ा नुमूदार हुवा, आप के दिल में ख़याल आया कि न जाने इस कीड़े को किस लिए पैदा किया गया होगा ? ब हुक्मे ख़ुदावन्दी वोह कीड़ा अल्लाह के नबी हज़रते दाऊद عَلَيْهِ السَّلَام से मुख़ातब हो कर कहने लगा : ऐ अल्लाह के नबी ! मुझ पर जब दिन का वक़्त आता है तो अल्लाह पाक ने मेरे दिल में येह बात डाली हुई है कि मैं दिन के वक़्त रोज़ाना एक हज़ार

मरतबा "سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ" पढ़ूं। ऐ अल्लाह के नबी ! मेरी रात इस तरह गुज़रती है कि अल्लाह पाक की इनायत और उस के हुक्म से मैं हर रात एक हज़ार मरतबा येह दुरूदे पाक "اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَعَلٰى آلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلِّمْ" पढ़ता हूं। आप इरशाद फ़रमाइए कि मैं आप से क्या इस्तिफ़ादा करूं और क्या फ़ैज़ हासिल करूं ? कीड़े की गुफ़्तगू सुन कर सय्यिदुना दाऊद عَلَيْهِ السَّلَام ने अल्लाह पाक से डर कर तौबा की और उसी पर भरोसा किया। (مکاشفۃ القلوب، ص10)

ऐ आशिक़ाने रसूल ! उस सुर्ख़ कीड़े ने तो हमें झंझोड़ कर रख दिया है कि वोह दिन के वक़्त रोज़ाना एक हज़ार मरतबा "سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ" और रात के वक़्त एक हज़ार बार दुरूद शरीफ़ पढ़ता है जब कि हमारी हालत येह है कि हम रोज़ाना एक हज़ार मरतबा तो क्या 100 मरतबा भी दुरूद शरीफ़ नहीं पढ़ पाते। अगर हमें कोई फ़ुज़ूल बैठक या गपशप का माहौल मिल जाए तो घन्टों तक बोरियत न हो और लोगों का ख़ूब मज़ाक़ उड़ाते हैं, लतीफ़ों (यानी चुटकुलों) के लिए हमारे पास बहुत सारा वक़्त है, अगर हमें टीवी मुयस्सर आए तो तीन तीन घन्टे फ़िल्में ड्रामे देखते हैं और रीमोट के ज़रीए मुख़्तलिफ़ चैनल्ज़ बदल कर नए नए ड्रामे ढूंडते रहते हैं, अगर गाने बाजे सुनने का मौक़ा मिले तो बग़ैर किसी बोरियत के घन्टों सुनते रहते हैं हालांकि गाने सुनने पर शदीद क़िस्म की वईदें हैं।[1]

गपशप की महाफ़िल और झूट

आह ! गपशप की महाफ़िल में लोगों को हंसाने के लिए ख़ूब झूट बोला जाता है हालांकि हदीसे पाक में है : हलाकत है उस के लिए जो लोगों को हंसाने के लिए झूट बोलता है। (ترمذی، 4/142، حدیث:2322) बद क़िस्मती से आज कल बहुत

---

1 ... अल्लाह पाक के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशाद है : मुझे आलाते मूसीक़ी को तोड़ने के लिए भेजा गया है। (کنز العمال، 8/99، حدیث:40682 مختصراً)

से लोग झूट की आफ़त में मुब्तला नज़र आते हैं। याद रहे ! सिर्फ़ हंसाने के लिए ही झूट नहीं बोला जाता दीगर मुआमलात में भी ख़ूब झूट बोला जाता है। अब तो येह ह़ालत हो गई है कि झूट बोलने में किसी क़िस्म की कोई आ़र या शर्म म़हसूस नहीं की जाती, झूट बोलने को एक फ़न समझा जाने लगा है। फ़ी ज़माना जो किसी गाहक को झूट बोल कर, चिकनी चुपड़ी बातें सुना कर और हेरा फेरी कर के सौदा बेच दे उसे कामयाब सेल्ज़मैन समझा जाता है। अगर कोई बेचारा सच बोल कर तिजारत करे और माल में मौजूद ऐ़ब को ज़ाहिर कर के बेचे तो लोग उसे बे वुक़ूफ़ समझते और उस का मज़ाक़ उड़ाते हैं। نَعُوْذُبِاللّٰہ ! आज कल लोगों ने येह ज़ेहन बना लिया है कि "झूट बोले बग़ैर गुज़ारा नहीं है।"

दो मछलियां पकड़ने वालों का वाक़िआ़

गुज़श्ता ज़माने में एक मोमिन और एक काफ़िर मछली का शिकार करने निकले, काफ़िर अपने झूटे माबूदों का नाम ले कर ख़ूब मछलियां पकड़ता रहा और मछलियों का ढेर लग गया। मोमिन अल्लाह का नाम ले कर जाल फेंकता रहा लेकिन हाथ कुछ न आया। शाम को सिर्फ़ एक मछली फंसी, वोह भी तड़पी, उछली और फुदक कर पानी में जा पड़ी। मोमिन पल्टा तो ख़ाली हाथ था और काफ़िर टोकरी भर कर लौटा। मोमिन पर मामूर (यानी मुक़र्रर कर्दा) फ़िरिश्ता अफ़सोस करने लगा, अल्लाह पाक ने उस फ़िरिश्ते को जन्नत में मोमिन का म़हल (और आ़लीशान मक़ाम) दिखाया तो वोह फ़िरिश्ता बे इख़्तियार पुकार उठा : ख़ुदा की क़सम ! इस अ़ज़ीमुश्शान म़हल में दाख़िले के बाद इस मुसलमान मछेरे को मछलियों के शिकार में नाकामी वाली मुसीबत की बिल्कुल ही परवा न होगी और जब अल्लाह पाक ने फ़िरिश्ते को जहन्नम में काफ़िर का ठिकाना दिखाया तो वोह बोला : ख़ुदा की क़सम ! इस अ़ज़ाब के मक़ाम पर जब येह पहुंचेगा तो उसे

(ढेर सारी मछलियां हाथ आने वाली) दुनिया की (आरिज़ी) ख़ुशी कोई फ़ायदा न देगी। (تنبیہ الغافلین، ص136)

गाहक टूटता है तो टूट जाए

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अगर बिलफ़र्ज़ सच बोलने की वजह से गाहक टूटता है तो टूट जाए मगर अल्लाह पाक और उस के प्यारे हबीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से हमारा महब्बत का रिश्ता नहीं टूटना चाहिए। याद रखिए ! अगर सच बोलने से कारोबार में कमी आती है तो कोई बात नहीं, परवरदिगारे आलम जो दो जहानों को पाल रहा है, जब तक हमारी ज़िन्दगी है हमें भी रोज़ी देगा, भूका नहीं रखेगा। चाहे कोई रिश्वत ले कर, सूदी लेन देन कर के, कारोबार में झूट बोल कर और मिलावट वाला माल बेच कर बड़े बड़े बंगले बना ले और उम्दा उम्दा कारें ले ले हमें अल्लाह पाक की रहमत से मायूस नहीं होना चाहिए और न ही येह गुमान करना चाहिए कि अल्लाह पाक हमारे हाल से बेख़बर है। याद रखिए ! अल्लाह पाक हमें आज़्मा रहा है, अनक़रीब हमें भी मौत आएगी और उसे भी जिस ने हराम ज़राएअ इख़्तियार कर के ख़ूब माल बनाया है लेकिन अल्लाह पाक ने चाहा तो उस के मुक़ाबले में हमारा मुआमला क़ाबिले रश्क होगा।

क़ाबिले रश्क कौन ?

ऐ आशिक़ाने रसूल ! ख़ुदा की क़सम ! दुनिया में ज़ियादा माल कमाने वाला क़ाबिले रश्क नहीं, क़ाबिले रश्क सिर्फ़ वोही है जो अपना ईमान सलामत ले कर क़ब्र में उतर जाए।

जगह जगह ईमान के डाकू मौजूद हैं और शैतान तरह तरह से ईमान पर हम्ले कर रहा है अपने ईमान की हिफ़ाज़त करना एक बहुत बड़ा मस्अला है। ग़फ़लत शिआरी, दुनियादारी, सिर्फ़ हुसूले दुनिया को अपनी ज़िन्दगी का मक़्सद

समझना, बुरे लोगों की सोहबत में रहना वग़ैरा इतनी सारी आफ़तों के होते हुए अगर ईमान सलामत रह जाए तो येह बहुत बड़ी बात है। अफ़सोस ! सद करोड़ अफ़सोस ! हमें अपने ईमान की सलामती की फ़िक्र नहीं क्यूंकि अगर ईमान की सलामती की फ़िक्र होती तो हम गुमराह, बद दीन और बुरे लोगों की सोहबत से दूर भागते जैसा कि हमें इस का हुक्म भी दिया गया है चुनान्चे पारह 7 सूरए अन्आम की आयत नम्बर 68 में इरशादे ख़ुदावन्दी है :

وَ اِمَّا یُنْسِیَنَّكَ الشَّیْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۶۸﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो कहीं तुझे शैतान भुलावे तो याद आए पर ज़ालिमों के पास न बैठ।

इस आयते मुबारका के तहत मुफ़स्सिरीन फ़रमाते हैं : यहां ज़ालिमीन से मुराद काफ़िरीन, मुब्तदिईन (यानी गुमराह व बद दीन) और फ़ासिक़ीन हैं।

(तफ़्सीराते अहमदिया, पा 7, अल अन्आम, तहतल आयह : 68, स. 388)

हो सकता है ऐसे लोगों की सोहबत में रहने से किसी की दुनिया तो आबाद हो जाए लेकिन आख़िरत बरबाद हो जाती है बल्कि बाज़ औक़ात दुनिया भी बरबाद हो जाती है।

देखे हैं येह दिन अपनी ही ग़फ़लत की बदौलत

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! दुनिया की महब्बत, दुनियवी मालो दौलत की लालच और ग़फ़्लत का नतीजा है कि आज मुसलमान तबाहो बरबाद हो गया है। अगर मुसलमान की ज़बान अल्लाह पाक के ज़िक्र से तर रहती और उस का दिल अल्लाह पाक की याद से मामूर रहता तो येह नौबत न आती लेकिन अफ़सोस ! मुआमला इस के बरअक्स है। पहले बन्दा जब आंख खोलता था तो सुब्ह सवेरे अल्लाह पाक का नाम उस के कान में पड़ता था जब कि अब सूरते हाल येह है कि बन्दा सुब्ह आंख खोलता है तो फ़िल्मी गानों की आवाज़ उस के कानों में

गूंजती है, पहले बन्दा आंख खोलता था तो पाकीज़ा सूरतें देखता था और अब मोबाइल पर बे ह़या औरतों के चेहरे देखता है। याद रखिए ! बद नज़री की सज़ा बड़ी हौलनाक है।

आंखों में आग भर दी जाएगी

मन्क़ूल है : जो कोई अपनी आंखों को नज़रे ह़राम से पुर करेगा क़ियामत के रोज़ उस की आंखों में आग भर दी जाएगी। (مکاشفۃ القلوب، ص10)

कानों में पिघला हुवा सीसा

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मन्क़ूल है, जो शख़्स किसी गाने वाली के पास बैठ कर गाना सुनता है क़ियामत के दिन अल्लाह पाक उस के कानों में पिघला हुवा सीसा उंडेलेगा। (کنز العمال، 15/96، حدیث:40662)

अपने नाज़ुक और कमज़ोर जिस्मों पर रह़म खाओ

ऐ कमज़ोर और नातुवां इस्लामी भाइयो ! अपने उन नाज़ुक और कमज़ोर जिस्मों पर रह़म खाइए जो न गर्मी बरदाश्त कर सकते हैं न सर्दी, मामूली दर्दे सर भी नहीं सह सकते, जिन्हें हल्का फुल्का बुख़ार भी तोड़ के रख देता है तो ऐसे जिस्म जहन्नम की आग कैसे बरदाश्त कर पाएंगे ! आह ! मामूली कीड़ा कपड़ों में घुस जाए तो तड़पा के रख देता है, च्यूंटी काट ले तो बन्दा उछल जाता है तो फिर सांप और बिच्छू के डंक कैसे बरदाश्त कर पाएगा ? यक़ीनन बरदाश्त न कर पाएगा लिहाज़ा अल्लाह पाक की रह़मत के दरवाज़े खुले हैं, हम सब को मिल कर उस की बारगाह में तौबा करनी चाहिए और उसी से ख़ैर की तौफ़ीक़ त़लब करनी चाहिए। याद रखिए ! अल्लाह पाक रह़मो करम और फ़ज़्ल फ़रमाने वाला है और वोह साइल को उस की त़लब से बहुत ज़ियादा देता है।

हम तो माइल ब करम हैं कोई साइल ही नहीं राह दिखलाएं किसे राह रवे मन्ज़िल ही नहीं

अल्लाह पाक हम सब को अपनी याद और अपने ज़िक्र की तौफ़ीक़ बख़्शे, हम सब के दिलों से ग़फ़लत का मैल और ज़ंग दूर कर के अपनी और अपने महबूबे करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की याद से हमारे दिलों को आईना बना दे।

اٰمِین بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللّٰہُ علیہ واٰلہٖ وسلّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

फ़ेहरिस्त

उन्वान	सफ़हा	उन्वान	सफ़हा
सय्यिदुना जुनैद बग़दादी और परिन्दा	01	जंगल में मेरे सिवा ज़िक्र करने वाला	09
मछलियां पालना	03	इस कीड़े को किस लिए पैदा किया गया होगा ?	11
बिल्ली पर ज़ुल्म करने का अ़ज़ाब	04	गपशप की महाफ़िल और झूट	12
परिन्दों को तक्लीफ़ न पहुंचे	04	दो मछलियां पकड़ने वालों का वाक़िआ	13
पीठ पर कोड़े का निशान	05	गाहक टूटता है तो टूट जाए	13
बिला वजह तक्लीफ़ पहुंचाना ज़ुल्म है	06	क़ाबिले रश्क कौन ?	14
बकरे पर ज़ुल्म का अन्दाज़	06	देखे हैं येह दिन अपनी ही ग़फ़लत की बदौलत	15
भैंस पर ज़ुल्म का अन्दाज़	06	आंखों में आग भर दी जाएगी	15
यादे इलाही से ग़ाफ़िल मछलियां	07	कानों में पिघला हुवा सीसा	16
केकड़े का शरई हुक्म	08	अपने नाज़ुक और कमज़ोर जिस्मों पर रहम खाओ	16
झींगा खाना कैसा ?	08	❀ ❀ ❀ ❀ ❀	❀

अगले हफ़्ते का रिसाला

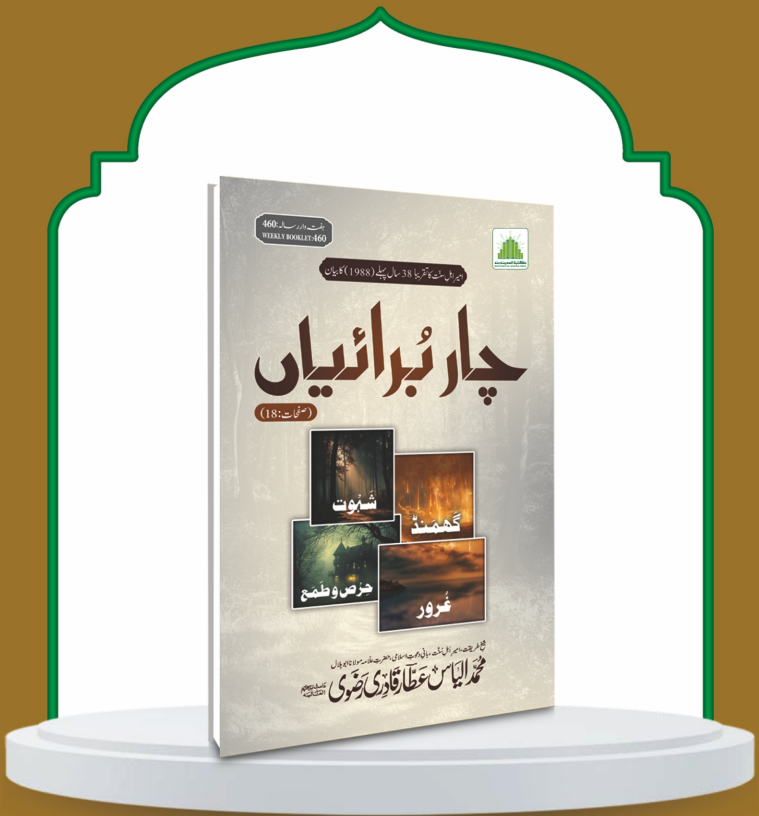

DAWATEISLAMI INDIA

FGN Channel
Dekhte Rahiye

مکتبۃ المدینہ ہند
MAKTABATUL MADINA INDIA

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025